Sl.No. :

नामांक Roll No.

No. of Sections – 3

No. of Printed Pages – 07

SS–32–SH. HD. (Hindi)

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2018

SENIOR SECONDARY EXAMINATION, 2018

हिन्दी शीघ्रलिपि

(SHORTHAND HINDI)

समय : 3¼ घण्टे

पूर्णांक : 40

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :

1) परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें ।

2) तीनों खण्ड एक ही बैठक में लिखाये जायें ।

3) प्रथम एवं द्वितीय खण्डों तथा द्वितीय एवं तृतीय खण्डों के बीच में 5-5 मिनट का मध्यान्तर दिया जाये । तीनों खण्डों के संकेत लिपि श्रुतलेखों के हिन्दी अक्षरीकरण के लिए 2¾ घंटे का समय दिया जाए ।

4) केवल निम्न विराम–चिह्न ही लगाएं :

पूर्ण विराम, अर्द्ध–विराम और प्रश्न–चिह्न एवं कोष्ठक ।

5) संकेत लिपि पेन्सिल से लिखा जाए तथा उसका अनुवाद हिन्दी में टंकण यंत्र / कम्प्यूटर से ही टंकित किया जाय । हाथ से लिखा मान्य नहीं होगा ।

6) संकेत लिपि में लिखा हुआ श्रुतलेख उत्तर–पुस्तिका के साथ नत्थी कर दिया जाए ।

7) संकेत लिपि के 20% अंक रखे गये हैं ।

8) खण्ड प्रथम 4 मिनट, खण्ड द्वितीय 5 मिनट तथा खण्ड तृतीय 7 मिनट लिखवाने के रखे गए हैं । प्रत्येक खण्ड 80 शब्द प्रति मिनट की गति से बोला जाय ।

यहाँ से काटिए

प्रश्न पत्र को खोलने के लिए यहाँ फाड़ें

यहाँ से काटिए

प्रथम–खण्ड

(इसे 80 शब्द प्रति मिनट की गति से लिखाया जाए) [10]

सेवा में,

श्रीमान् चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री महोदय

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग,

मध्य–प्रदेश सरकार, भोपाल (/म.प्र.) [¼]

विषय:– अल्पवेतन भोगी कार्मिक का पद स्थापन करवाने के संबंध में।

महोदयजी,

उपरोक्त विषयान्तर्गत निवेदन है/ कि मैं एक संविदा कर्मी लेखाकार के पद पर रतलाम जिलें में [½]
कार्यरत था लेकिन श्रीमान् निदेशक एन. आर. एच. एम./चिकित्सा विभाग के निर्देशानुसार मुख्य [¾]
चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, रतलाम के पत्रांक 1566–72 दिनांक 18.11//.2016 के द्वारा [1]
अग्रिम आदेश हेतु भोपाल मुख्यालय कार्यालय में उपस्थिति दिए जाने के अनुसरण में
दिनांक 24.11/.16 को भोपाल मुख्यालय में उपस्थिति दी गई । पुन: अवकाश आवेदन प्रस्तुत करते [1¼]
हुए रतलाम आ गया था/। [1½]

मैं एक अल्प वेतन संविदा कार्मिक हूँ तथा मेरा कुल वेतन मात्र 12000 रू है तथा मुझे
पिछले 4/ माह से वेतन भी नहीं मिला है। ऐसी स्थिति में मैंने रतलाम जिले में पदस्थापन हेतु [1¾]
निवेदन किया था//। [2]

पुन: मुख्यालय भोपाल में सम्पर्क करने पर यह अवगत करवाया गया कि मेरा पदस्थापन दिनांक 16.12./16 को स्वास्थ्य केन्द्र मनासा जिला मन्दसोर में कर दिया गया है। हालांकि मुझे [2¼] अधिकारिक रूप से स्थानान्तरण// पदस्थापन आदेश प्राप्त नहीं हुए है, लेकिन मैं मूल रूप से रतलाम [2½] जिलें का निवासी हूँ तथा अल्प वेतन/ में परिवार सहित इतना दूर पदस्थापन करने से जीवन निर्वहन [2¾] दुश्वर हो जाता है।

ऐसी स्थिति में श्रीमान् के // समक्ष आवेदन प्रस्तुत कर सादर निवेदन है कि अल्प वेतन में [3] परिवार सहित दूर स्थान पर रहना अत्यन्त ही कठिन/ है। साथ ही रतलाम जिलें के विभिन्न स्थानों पर [3¼] संविदा लेखाकर्मी के पद रिक्त है। ऐसे में मेरा/ पदस्थापन रतलाम स्थित प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, [3½] ओखला रिक्त पद पर करवाने की अनुकम्पा करें।

धन्यवाद।

भवदीय,/ [3¾]

विकास राठी

लेखकार, एन.आर.एच.एम.

दिनांक : 26.10.17 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र ओखला// [4]

द्वितीय–खण्ड

(इसे प्रति मिनट 80 शब्दों की गति से लिखा जाय) [10]

मेसर्स अखेराम अनन्तराम एण्ड़ संस

(कपड़े के थोक व्यापारी एवं कमीशन एजेन्ट)

मो.सं.: 09764746700 ए/I/–15, सायब टावर, [¼]

फेक्स सं.: 774/14 शोभा पार्क के सामने,

जी.एस.टी./सं.: 75/69875 लाल लाजपत राय रोड़, [½]

पत्र सं.: 945 चोपट हिल, नयापुरा,

कोड़/सं.: ए बी सी /3/91 जामनगर (गुजरात) [¾]

दिनांक: 16-10-17

सर्वश्री // मोतीराम मोजीराम एण्ड़ कम्पनी, [1]

रामभक्त मन्दिर के सामने,

रिंग रोड़

बनारस (उ.प्र.)

विषय:/ माल की शिकायत के क्रम में। [1¼]

प्रिय महोदय,

निवेदन है कि हमने आपको दिनांक 6–9–/17 को पत्र सं. 885 के अनुसार माल का आदेश [1½]
दिया था। आपने उस माल की पूर्ति 25./9.17 तक करने का वादा किया था । हमने इस संबंध में [1¾]
75000/= रू का ड्राफ्ट सं.//17541 दिनांक 24.9.17 का बनाकर अग्रिम में भेजा था। परन्तु [2]
खेद इस बात का है/ कि बार–बार टेलिफोन करने के पश्चात् आपने हमारा माल 10.10.17 को रेल्वे [2¼]
बिल्टी के / माध्यम से भेजा था। [2½]

माल प्राप्ति के पश्चात् कुछ माल की गांठें क्षतिग्रस्त पाई गई थी। जिसकी हमने /टेलिफोन के [2¾]
माध्यम से तुरन्त ही सूचना भेज दी थी । आपने कहा था कि हमारा कर्मचारी आकर माल
का // निरीक्षण कर लेगा । परन्तु न तो आपका कर्मचारी आया एवं न ही आप द्वारा सन्तोषजनक [3]
जबाब दिया गया।/ [3¼]

क्षति ग्रस्त माल का विवरण इस प्रकार है:–

1. एक गांठ का माल ऐसा प्रतीत हो रहा है/ कि वह पूर्ण रूप से द्वितीय श्रेणी का है। [3½]

2. दूसरी गांठ के माल से आधी से ज्यादा/ साड़ियों का माल अन्दर से कटा फटा पाया गया। ग्राहकों ने [3¾]
माल वापस लाकर हमारी दुकान पर पटक कर// चलें गए। इससे हमें शर्मीन्दगी महसूस हुई एवं इस [4]
कारण हमारी ख्याति पर पहली बार कुप्रभाव पड़ा है।/ [4¼]

आपके कर्मचारियों की लापरवाही के कारण दीपावली जैसे त्योहार पर हमें बहुत ही धक्का लगा है। इस संबंध में / आपसे निवेदन है कि आप स्वयं अथवा आपका कर्मचारी हमारे यहॉं आकर इस [4½]
मामले को तुरन्त ही निपटाने का कष्ट / करें। [4¾]

धन्यवाद।

हम है आपके,

अखेराम अनन्तराम एण्ड़ संस के लिए,

सही

(अनन्तराम)

साझेदार।// [5]

तृतीय खण्ड़

(इसे 80 शब्द प्रति मिनट की गति से लिखा जाय) [20]

वह ज्योति जलाओं जिसमें तेल नहीं डालना पड़ता

बिरहिनी मंदिर दियना बार। बिन बाती बिन तेल जुगति सो/ बिन दीप उजियार। मंदिर है देह, [¼]
ज्योति है आत्मा। इस मंदिर में तो परमात्मा विराजमान है।/ कहां भागे जाते हो? किसे खोजने [½]
निकले हो? कितने समय से तो खोज रहे हो, परन्तु मिला/ नहीं। जरूर कोई बुनियादी चूक हो रही है। [¾]
जो भीतर हो, उसे बाहर कैसे खोजोगें, उसे// कैसे पाओगें। मंदिर हो तुम। योग तैयार करता [1]

है तुम्हारी देह को, ताकि तुम भीतर सरक सको / और ध्यान तुम्हें देह के भीतर बैठने की कला [1¼]
सिखाता है। जिसने देह के द्वार खोलने के लिए योग/ से व ध्यान से भीतर बैठने की कला सीखली [1½]
उसने परमात्मा को पा लिया है। आत्म – ज्योति/ भीतर से जलानी है। यह दिया तुम्हारी देह में [1¾]
जलना है।

जब उतरोगे देह की सीढ़ियो से तब// पा ओगे हृदय को। वह तुम्हारा अन्तर्गृह है। फिर [2]
उतरो हृदय की सीढ़ियो से ओर तुम पाओगे उस अमृत/ के स्त्रोत को जिसके बिना जीवन उदास है, [2¼]
जिसके बिना जीवन विषाद है। अपने घर की आत्म/–ज्योति को जलाओ, या जलती आत्म– [2½]
ज्योति को पहचानो।

हमने कैसी दुनिया बनाली है/ चारों तरफ एक गहन हताशा है। चारों तरफ दिलो ने धड़कना [2¾]
बंद कर दिया है। आंखो में मस्ती// नहीं है। प्राणों में कोई गीत नहीं है। पैरों में कोई नृत्य नहीं [3]
है। परिणाम स्वरूप हम/ थके–मांदे किसी तरह धक्के खाते हम अपनी कब्रों की तरफ बढ़ जाते [3¼]
है। कहीं कोई तारा नहीं/ दिखाई पड़ता दूर आकाश में भी तारा नहीं दिखाई पड़ता । तारों ही तारों [3½]
से भर जाता है आकाश,/ बस भीतर की ज्योति दिखाई पड़ जाय पहले । वहीं से शुरू होती है [3¾]
सही यात्रा जिसने भीतर की // ज्योति देखी है, उसे चारों तरफ ज्योतिर्मय के दर्शन होने लगते है। [4]

तुम्हारा विरह मुझे छूता है,/ तुम्हारा दु:ख मुझे छूता है। मैं तुम्हें एक ऐसी युक्ति देता हूँ। एक [4¼]
ऐसा चमत्कार तुम्हारे भीतर घट/ सकता है, क्योंकि मेरे भीतर घटा है। जो एक के भीतर घटा है, [4½]
वह सबके भीतर घट/ सकता है। भीतर एक ज्योति जलती है, उसमें तेल नहीं डालना पड़ता है, [4¾]
उसमें बाती नहीं लगानी // पड़ती है। वहां कोई दीपक भी है, यह कहना ठीक नहीं, मगर उजियारा [5]
बहुत है, रोशनी / बहुत है। जिन दियो मे तेल भरना पडता है, वे तो बुझ जाएंगे। [5¼]
जिसमें बाती लगानी है/, वह जल जाएगी, जिन्हे दियों की जरूरत पड़ती है, वे मिट्टी के दिये है, [5½]
कभी भी/टूट सकते है। [5¾]

एक ऐसी ज्योति खोजनी है जो हमारा स्वरूप–सिद्ध अधिकार है। हम ही है// वह ज्योति जहां न [6]
तो तेल है, न ही बाती एवं न ही दिया एवं उजाला बहुत है।/ एक अपूर्व घटना घटती है साधक के लिए [6¼]
एवं उसी दिन है परमात्मा का रहस्य उसे अनुभव में आता है/। रहस्यों का रहस्य यह है कि हमारे भीतर [6½]
एक शाश्वत उजाला है जो जन्म से पहले भी था व / मृत्यु के बाद भी रहेगा। जिसका कोई कारण नहीं, [6¾]
अकारण है। अत: बुझाया नहीं जा सकता// [7]

❍❍❍

DO NOT WRITE ANYTHING HERE